

# INTERNATIONAL JOURNAL OF HISTORY

E-ISSN: 2706-9117  
P-ISSN: 2706-9109  
Impact Factor (RJIF): 5.63  
[www.historyjournal.net](http://www.historyjournal.net)  
IJH 2025; 7(12): 69-71  
Received: 06-10-2025  
Accepted: 08-11-2025

कलम बाई चौहान  
इतिहास विभाग, प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ  
एक्सीलेंस, क्रांतिकारी शहीद छितुसिंह  
किराड, शासकीय स्नातकोत्तर  
महाविद्यालय, आलीराजपुर, जिला-  
आलीराजपुर, मध्य प्रदेश, भारत

## प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा एवं इसकी वर्तमान प्रासंगिकता

### कलम बाई चौहान

DOI: <https://doi.org/10.22271/27069109.2025.v7.i12b.591>

#### सारांश

बदलते सामाजिक परिवेश और भारतीय मूल्यों के बीच हमारी शिक्षा व्यवस्था को समावेशी बनाना अति आवश्यक है यह समावेशी व्यवस्था भारतीय ज्ञान परंपरा को लिये बगेर नहीं चल सकती। भारतीय ज्ञान परंपरा विश्व की सबसे प्राचीन एवं समग्र ज्ञान प्रणालियों में से एक है। यह न केवल आध्यात्मिकता, दर्शन और धर्म तक सीमित है, बल्कि विज्ञान, गणित, चिकित्सा, वास्तुशास्त्र, कला, और पर्यावरणीय संतुलन जैसे विविध क्षेत्रों में भी गहन योगदान देती है। वर्तमान युग में जहाँ वैश्वीकरण और तकनीकीकरण ने पारंपरिक मूल्यों को चुनौती दी है, वहाँ भारतीय ज्ञान परंपरा अपने मानवीय और समग्र दृष्टिकोण के कारण पुनः प्रासंगिक हो रही है। इस शोध-पत्र का उद्देश्य भारतीय ज्ञान परंपरा की ऐतिहासिक जड़ों, उसके प्रमुख घटकों, वर्तमान परिवृश्य, चुनौतियों और संभावनाओं का विश्लेषण करना है जिससे कि प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा को समकालीन शिक्षा और जीवनशैली में एकीकृत किया जा सकता है।

**शब्द-कुंजी:** भारतीय ज्ञान परंपरा, शिक्षा, आयुर्वेद, योग, NEP 2020, वास्तुकला कला और संस्कृति

#### प्रस्तावना

भारत की सभ्यता “ज्ञान, संस्कृति और साधना” पर आधारित रही है। यहाँ ज्ञान को केवल ज्ञानकारी नहीं, बल्कि आत्मबोध और जीवन का मार्ग माना गया। भारतीय ज्ञान परंपरा (Indian Knowledge System – IKS) का उद्देश्य मानव जीवन को धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के संतुलन के माध्यम से विकसित करना रहा है। आज के समय में जब शिक्षा केवल रोजगार तक सीमित होती जा रही है, भारतीय ज्ञान परंपरा का समग्र दृष्टिकोण व्यक्ति को मानसिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक रूप से संतुलित बनाता है।

भारतीय ज्ञान परंपरा (Indian Knowledge System) विश्व की प्राचीनतम और समृद्धतम ज्ञान परंपराओं में से एक है। इसकी जड़ें वैदिक काल से भी पहले की सभ्यताओं में देखी जाती हैं। इस परंपरा ने न केवल भारत, बल्कि सम्पूर्ण मानवता को दर्शन, गणित, विज्ञान, चिकित्सा, साहित्य, योग, ज्योतिष और कला के क्षेत्रों में अमूल्य योगदान दिए हैं। विज्ञान की प्रगति हर युग की आवश्यकता है किन्तु इसमें दूरदर्शिता एवं मानव कल्याण का भाव सर्वोपरि है।

#### शोध उद्देश्य (Research Objectives)

- भारतीय ज्ञान परंपरा के ऐतिहासिक स्वरूप का अध्ययन करना।
- आयुर्विज्ञान प्रणाली में इसकी प्रासंगिकता का विश्लेषण करना।
- भारतीय ज्ञान प्रणाली के पुनरुत्थान के प्रयासों और चुनौतियों को पहचानना।
- भविष्य की संभावनाओं को रेखांकित करना।

#### भारतीय ज्ञान परंपरा का ऐतिहासिक स्वरूप (Historical Evolution)

##### प्राचीन भारतीय साहित्य और ज्ञान संचरण (Ancient Indian Literature and Knowledge Transmission)

भारतीय ज्ञान प्रणाली (आईकेएस) का इतिहास सहस्राब्दियों तक फैला हुआ है, जिसकी शुरुआत वैदिक काल (लगभग 1500-500 ईसा पूर्व) और वेदों के मूल ग्रंथों से होती है। यह विभिन्न कालखंडों में विकसित हुआ, जिसमें दर्शन, विज्ञान, गणित, चिकित्सा और कला शामिल हैं, यह प्रणाली प्राचीन ग्रंथों, मौखिक परंपराओं और गुरुकुलों और विश्वविद्यालयों जैसी संस्थागत शिक्षण पद्धतियों में गहराई से निहित है।

- वैदिक साहित्य:** वेद (ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद) भारतीय सभ्यता के सबसे प्राचीन ग्रंथ हैं, जो ब्रह्मांड विज्ञान, दर्शन, कर्मकांड और नैतिकता के बारे में ज्ञानकारी प्रदान करते हैं। उपनिषद, ब्राह्मण और आरण्यक जैसे संबद्ध ग्रंथ तत्त्वमीमांसा, आध्यात्मिक ज्ञान और कर्मकांड प्रथाओं का अन्वेषण करते हैं।

#### Corresponding Author:

कलम बाई चौहान  
इतिहास विभाग, प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ  
एक्सीलेंस, क्रांतिकारी शहीद छितुसिंह  
किराड, शासकीय स्नातकोत्तर  
महाविद्यालय, आलीराजपुर, जिला-  
आलीराजपुर, मध्य प्रदेश, भारत

- महाकाव्य और पुराण:** महाभारत और रामायण जैसे महाकाव्य नैतिक और आचार संबंधी दुविधाओं को एकीकृत करते हैं, जबकि पुराण सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और पौराणिक कथाओं को सूचीबद्ध करते हैं।
- संस्कृत साहित्य:** कालिदास की शकुंतला और आर्यभट्ट की आर्यभट्टीय जैसी शास्त्रीय कृतियाँ क्रमशः नाटक और गणित में योगदान को दर्शाती हैं।

### ज्ञान संचरण

- प्रारंभ में मौखिक रूप से, ज्ञान संचरण कृषियों और छात्रों द्वारा स्मरण और पाठ पर मिर्च था।
- ताड़ के पत्तों पर लिखी पांडुलिपियाँ और बर्च की छाल से लिखे ग्रंथ इस ज्ञान को संरक्षित करने का प्राथमिक माध्यम बन गए, जिन्हें अक्सर मंदिर पुस्तकालयों में संग्रहित किया जाता था।
- प्राचीन पुस्तकालय और विश्वविद्यालय
- नालंदा, वर्तमान बिहार में स्थित, नालंदा विश्वविद्यालय में तीन बहुमंजिला इमारतों वाला एक विशाल पुस्तकालय (धर्मांग) था, जिसमें पांडुलिपियों का विशाल संग्रह था।
- तक्षशिला चिकित्सा, कानून और सैन्य विज्ञान जैसे विविध विषयों पर केंद्रित था।
- विक्रमशिला और ओदंतपुरी बौद्ध शिक्षा के केंद्र थे, जहाँ ग्रन्थों का समृद्ध भंडार था।
- लिपि विकास: शिलालेखों और पांडुलिपियों के लिए ब्राह्मी और खरोष्ठी लिपियों का विकास हुआ, जिसने ज्ञान के संरक्षण में योगदान दिया।
- मध्यकालीन योगदान:** इस्लामी और फ़ारसी संस्कृतियों के प्रभाव से, भारतीय ज्ञान का विस्तार अनुवादों और रूपांतरणों के माध्यम से हुआ।
- भक्ति और सूफी आंदोलन: इन आंदोलनों ने स्थानीय भाषाओं को शामिल करके भारतीय साहित्य को समृद्ध किया और आध्यात्मिक और दार्शनिक विचारों को आम लोगों तक पहुँचाया।
- औपनिवेशिक युग:** पुस्तकालय और पश्चिमी संपर्क ब्रिटिश औपनिवेशिक काल में ज्ञान प्रणाली में बदलाव देखा गया। आधुनिक पुस्तकालय: एशियाटिक सोसाइटी (1784 में स्थापित) जैसी संस्थाओं का उद्देश्य पश्चिमी शिक्षा को बढ़ावा देते हुए प्राचीन पांडुलिपियों का संरक्षण करना था।
- प्राचीन ग्रन्थों की पुनर्जीवन:** पश्चिमी विद्वानों ने भगवद् गीता और अर्थशास्त्र जैसी कृतियों का अनुवाद किया, जिससे भारतीय दर्शन और इतिहास में वैश्विक रुचि जागृत हुई।
- स्वतंत्रता-पश्शात और आधुनिक विकास:** साहित्य और ज्ञान संरक्षण को बढ़ावा देने के लिए भारतीय राष्ट्रीय पुस्तकालय और साहित्य अकादमी जैसे संस्थानों की स्थापना। भारतीय डिजिटल पुस्तकालय जैसे डिजिटल पुस्तकालय वैश्विक पहुँच के लिए पांडुलिपियों और पुस्तकों का डिजिटलीकरण कर रहे हैं।

### भारतीय ज्ञान परंपरा की विशेषताएँ

- समग्र दृष्टिकोण (Holistic View):** भारतीय ज्ञान परंपरा शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा के समन्वय पर बल देती है।
- अध्यात्म और विज्ञान का संतुलन:** जहाँ एक ओर उपनिषद और दर्शनशास्त्र आत्मज्ञान की बात करते हैं, वहीं दूसरी ओर चरक संहिता, भास्कराचार्य, और आर्यभट जैसे विद्वानों ने विज्ञान और गणित में गहरा योगदान दिया।
- मूल्यों पर आधारित शिक्षा:** शिक्षा केवल सूचनाओं का संप्रेषण नहीं थी, बल्कि यह चरित्र निर्माण, आत्मानुशासन और नैतिकता पर आधारित थी।
- गुरुकुल प्रणाली:** शिक्षक और शिष्य के मध्य आत्मीय संबंध होता था, और शिक्षा जीवन जीने की कला सिखाती थी।
- प्रमुख क्षेत्रों में योगदान**

क्षेत्र	योगदान / उदाहरण
गणित	शून्य की खोज, दशमलव प्रणाली, बीजगणित
चिकित्सा	आयुर्वेद (चरक, सुश्रुत), योग
दर्शन	वेदांत, सांख्य, न्याय, बौद्ध और जैन दर्शन
भाषा और व्याकरण	पाणिनि की अष्टाघातीय, संस्कृत की संरचना
ज्योतिष और खगोलशास्त्र	खगोल गणनाएँ, पंचांग निर्माण, ग्रहों की गति का ज्ञान
कला और वास्तुकला	भरतनाट्यम, नाट्यशास्त्र, मंदिर स्थापत्य कला

### वर्तमान परिदृश्य (Contemporary Relevance)

भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय (MoE) के भारतीय ज्ञान प्रणाली प्रभाग (IKS प्रभाग) की स्थापना अक्टूबर 2020 में की गई थी, जिसका उद्देश्य IKS के सभी पहलुओं पर अंतःविषय और बहुविषयक अनुसंधान को बढ़ावा देना, आगे के शोध और सामाजिक अनुप्रयोगों के लिए IKS की गहरी समझ और प्रशंसा को संरक्षित और प्रसारित करना है। IKS प्रभाग IKS केंद्रों की स्थापना और IKS में अंतःविषय और बहुविषयक अनुसंधान का समर्थन और वित्तपोषण करता है। प्रभाग संकाय विकास कार्यक्रमों, कार्यशालाओं, पाठ खनन और प्रलेखन परियोजनाओं, और अन्य संस्थानों के साथ साझेदारी में कई आउटटरीच गतिविधियों के संचालन के अलावा स्नातक छात्रों के लिए इंटर्नशिप कार्यक्रम भी संचालित करता है। इसके अतिरिक्त, प्रभाग ने विभिन्न भारतीय भाषाओं में लेख प्रकाशन के लिए IKS विकी पोर्टल की शुरुआत की, जिससे पारंपरिक ज्ञान प्रणालियों के साथ व्यापक प्रसार और जुड़ाव को बढ़ावा मिला।

भारतीय ज्ञान परंपरा आज पुनः वैश्विक पटल पर मान्यता प्राप्त कर रही है। अनेक विश्वविद्यालय और अनुसंधान संस्थान भारत में और विदेशों में इस परंपरा को अध्ययन और शोध का विषय बना रहे हैं। भारत सरकार द्वारा "भारतीय ज्ञान परंपरा" को नई शिक्षा नीति (NEP 2020) में एक महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। भारतीय ज्ञान प्रणाली अब पुनः आधुनिक शिक्षा और अनुसंधान का हिस्सा बन रही है। नई शिक्षा नीति (NEP 2020) में भारतीय भाषाओं, संस्कृति, और योग को शिक्षा का हिस्सा बनाया गया। संयुक्त राष्ट्र द्वारा "अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस" की स्वीकृति एवं आयुर्वेद और सिद्ध चिकित्सा को WHO की मान्यता प्राप्त है। साथ ही IKS के अध्ययन के लिए e-content, MOOCs और डिजिटल रिपोजिटरी विकसित की जा रही हैं।

### प्रमुख चुनौतियाँ (Major Challenges)

- पारंपरिक ज्ञान का वैज्ञानिक प्रमाणन और दस्तावेजीकरण का अभाव।
- युवाओं में भारतीय विषयों के प्रति रुचि की कमी।
- पाश्चात्य शिक्षा मॉडल का वर्चस्व।
- नीति स्तर पर समन्वय की कमी।

### संभावनाएँ और उपाय (Opportunities and Suggestions)

- IKS आधारित curriculum design को सभी शिक्षा स्तरों में लागू करना।
- अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर "Indian Knowledge Diplomacy" को बढ़ावा देना।
- योग, आयुर्वेद, पर्यावरण, और दर्शन के क्षेत्र में बहु-विषयी अनुसंधान को प्रोत्साहन।
- AI, Sustainability, और Ethics जैसे आधुनिक विषयों में भारतीय दृष्टिकोण को समाहित करना।

### निष्कर्ष (Conclusion)

भारतीय ज्ञान प्रणाली आज भी अत्यंत प्रासंगिक है और तनाव प्रबंधन एवं स्थिरता जैसी समकालीन चुनौतियों के व्यावहारिक समाधान प्रस्तुत करती है। इसके विशाल ज्ञान भंडार में व्यक्तियों, समुदायों और मानवता के उत्थान की

क्षमता है।

भारतीय ज्ञान परंपरा केवल अतीत की धरोहर नहीं, बल्कि वर्तमान और भविष्य का मार्गदर्शन करने वाली जीवंत शक्ति है। आवश्यकता है कि हम इसे समझें, पुनर्परिभाषित करें और आधुनिक जीवन में समाहित करें। स्वदेशी विज्ञान आन्दोलन के माध्यम से आधुनिक विज्ञान को प्राचीन भारतीय ज्ञान से जोड़ने का अनवरत प्रयास है। यदि हम अपनी इस समृद्ध विग्रहत को पुनः आत्मसात कर सकें, तो भारत एक बार फिर विश्वगुरु बनने की दिशा में अग्रसर हो सकता है।

### **संदर्भ सूची**

1. Ministry of Education. National Education Policy 2020. Government of India; 2020.
2. Indian Knowledge Systems (IKS) Division Portal.
3. Radhakrishnan S. Indian Philosophy. Oxford University Press; 1948.
4. Sharma R. Bhartiya Gyan Parampara aur Adhunik Shiksha. New Delhi: Bhartiya Prakashan; 2022.
5. Subbarayappa BV. Science in India: Past and Present; 2019.
6. Vivekananda S. The Complete Works of Swami Vivekananda. Vol. 3.
7. UNESCO. Yoga: Intangible Cultural Heritage of Humanity; 2022.
8. Pandey V. The essentials of Indian philosophy. Bengaluru: CVG Publications; 2017.
9. Varakhedi S. Integration of IKS and ILs in Indian Education through NEP 2020. Central Sanskrit University, New Delhi.
10. Awasthi A. Ayurveda and globalization: Exploring the impact of Ayurveda on contemporary healthcare. Int J Ayurveda Integr Med. 2019;4(3):12-8.
11. Mishra V, Rai A. The philosophy of Yoga: Implications for global health and well-being. Glob Health J. 2021;11(1):44-56.
12. Gupta V, Sharma M. Yoga in the West: The globalization of an Indian practice. J Cult Herit. 2019;13(1):34-46.
13. Zuber F, Singh K. Indian philosophical contributions to ethical decision-making in a globalized world. Ethics Philos. 2020;22(2):79-91.
14. Khan M, Bhat R. Relevance of ancient Indian science and technology in modern research. J Indian Sci. 2018;41(4):142-53.
15. Parihar S, Chouhan P. Int J Enhanc Res Educ Dev. 2024;12(1).